बड़े लोगों का बचपन

येहुदी मेनुहिन

महान वायलिन वादक

जब कोई संगीतकार बड़ी संख्या में दर्शकों के सामने अपना पहला प्रदर्शन देता है, तो उसके पीछे आमतौर पर कई वर्षों की कड़ी मेहनत होती है. येहुदी मेनुहिन ने आठ साल की उम्र में अपना पहला बड़ा संगीत कार्यक्रम दिया था. येहुदी को संगीत की समझ प्रकृति से उपहार में मिली थी. उनकी बहनें - याल्टाह और हेपज़ीबा भी संगीत में प्रतिभाशाली थीं और तीनों बच्चे इतने बुद्धिमान थे कि उनके माता-पिता, जो स्कूली शिक्षक थे, ने उन्हें घर पर ही पढ़ाने का फैसला किया. येहुदी के जन्म से पहले मेनुहिन परिवार रूस से अमेरिका आ गए थे. मिस्टर मेनुहिन सैन फ्रांसिस्को के एक छोटे हीब्रू स्कूल के प्रमुख थे.

मेनुहिन की रसोई में एक ब्लैकबोर्ड लगा था जहाँ दिन में बच्चे अपनी माँ के साथ भाषाएँ सीखते थे, (येहुदी दस साल की उम्र में पाँच भाषाएँ बोल और लिख सकते थे.) शाम को उनके पिता उन्हें गणित, इतिहास और हिब्रू सिखाते थे.

येहुदी के माता-पिता को संगीत से प्यार था और क्योंकि वो अपने बच्चों को कहीं और छोड़ नहीं सकते थे, इसलिए वे बच्चों को अपने साथ ही संगीत समारोहों में ले जाते थे, जबकि वे अभी भी बहुत छोटे थे. फिर भी, जब येहुदी चार साल की उम्र में वायलिन बजाना चाहता था तो माँ-बाप काफी चकित हुए. उन्होंने उसके लिए एक खिलौना वायलिन खरीदा लेकिन येहुदी ने गुस्से में उसे नीचे फेंक दिया, क्योंकि उससे असली संगीत नहीं निकल रहा था. बाद में उसकी दादी ने उसे एक असली वायलिन खरीद कर दिया और फिर उसने उसपर अपना अभ्यास शुरू किया. येहुदी वायलिन बजाने के लिए इतने उत्सुक थे और उन्हें लगा कि उसे सीखना काफी आसान होगा. लेकिन वो अभी इतने छोटे थे कि उन्हें वाद्य यंत्र पकड़ने में कठिनाई होती थी. प्रत्येक पाठ एक बुरे सपने की तरह था, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी. वो हर दिन घंटों अभ्यास करते थे जब तक कि माता-पिता उसे बिस्तर पर नहीं लिटाते और उससे वायलिन नहीं ले लेते थे. केवल छह महीने के अंदर ही उसने तकनीक में महारत हासिल कर ली.

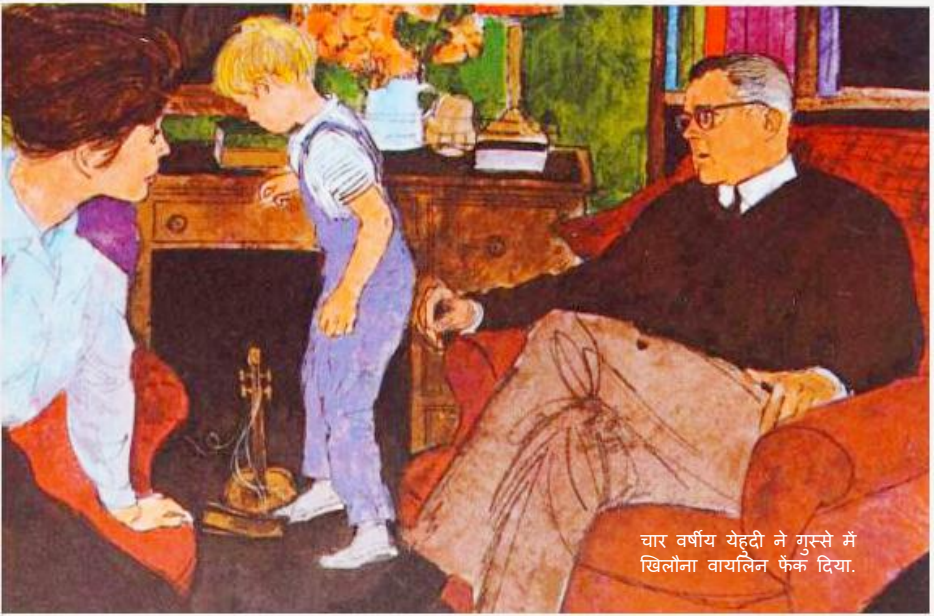

चार वर्षीय येहुदी ने गुस्से में खिलौना वायलिन फेंक दिया.

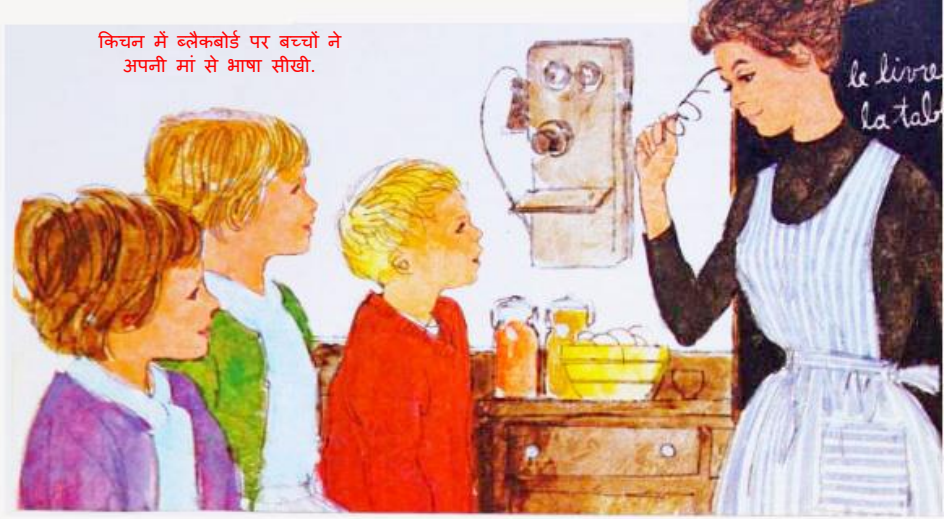

किचन में ब्लैकबोर्ड पर बच्चों ने अपनी मां से भाषा सीखी.

जब वो सात साल का था तब येहुदी ने एक महान अमेरिकी सोलोइस्ट लुई पर्सिंगर के साथ अध्ययन शुरू किया. पर्सिंगर बहुत सख्त थे लेकिन उन्होंने बहुत अच्छा पढ़ाया. एक साल के भीतर येहुदी अपनी स्मृति से, महान संगीतकारों के कई महान रचनाओं को बजा सकते थे. उन्होंने संगीत को इतनी जल्दी आत्मसात कर लिया कि उनके उस्ताद को उन्हें सरगम का अभ्यास करवाने में कठिनाई होती थी.

सैन-फ्रांसिस्को सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा के साथ अपने पहले संगीत कार्यक्रम के बाद सिडनी एहरमन नामक एक अमीर वकील ने येहुदी के आगे के प्रशिक्षण के लिए वज़ीफ़ा देने की पेशकश की. पहले तो माता-पिता ने मना किया क्योंकि उन्हें डर था कि उससे येहुदी पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित होगा. लेकिन मिस्टर एहरमन ने उनसे कहा कि वे अपने बेटे को घर पर रखकर उसे नुकसान ही पहुंचाएंगे, इसलिए वे अंत में वे मान गए. जब येहुदी 10 साल का था तो उसका पूरा परिवार यूरोप चला गया. सबसे पहले उन्होंने बेल्जियम के महान वायलिन वादक यसाय से मुलाकात की. यसाय येहुदी के खेल से खुश थे लेकिन जब उन्होंने उससे एक साधारण धुन बजाने को कहा तो येहुदी उसे नहीं बजा पाए. बूढ़े उस्ताद ने येहुदी को एक चेतावनी दी कि वो अपने बुनियादी सीख की उपेक्षा न करे. वो एक ऐसी चेतावनी थी जो येहुदी को बाद में समझ आई.

बेल्जियम से वे पेरिस गए और वहाँ येहुदी ने एक रोमानियाई उस्ताद एनेस्को को उसे पढ़ाने के लिए राजी किया. अगले दस वर्षों के दौरान येहुदी ने पूरी दुनिया की यात्रा की और वो एक प्रसिद्ध वायलिन वादक बन गए. शुरुआती दिनों में कई आलोचक थे जो सोचते थे कि एक बच्चा, महान संगीत के साथ न्याय नहीं कर सकता था लेकिन जब उन्होंने येहुदी को सुना, तो उन्होंने अपने विचार बदलने पड़े. जब परिवार ने देखा कि येहुदी का करियर अब नहीं रुकेगा, तब उसके पिता ने अपनी नौकरी छोड़ दी और फिर पूरा परिवार एक साथ यात्रा करने लगा. येहुदी के माता-पिता ने अपने बेटे को एक सामान्य, विनम्र बच्चा रखने के लिए काफी संघर्ष किया.

लेकिन फिर भी येहुदी बचपन के कई सुखों से वंचित रहा. हाथों में चोट लगने के डर से वो न तो साइकिल चला सकता था और न ही कठिन खेल, खेल सकता था. प्रशंसकों द्वारा परेशान किए जाने या अपहरण होने के डर से, वो कभी अकेले घर से बाहर नहीं निकलता था! वो केवल अपनी दो बहनों को ही जानता था, लेकिन साझा हितों ने उन्हें एक करीबी और स्नेही परिवार बनाया था.

1936 में जब वे 20 वर्ष के थे, तब तक येहुदी हर महाद्वीप में अपना प्रदर्शन और सैकड़ों संगीत कार्यक्रम दे चुके थे. वो इतने थक गए थे कि माता-पिता ने उससे कैलिफोर्निया में अपने घर में आराम करने को कहा.

फिर कई महीनों तक येहुदी ने वायलिन को छुआ तक नहीं. जब उसने फिर से शुरू करने की कोशिश की, तो उसने पाया कि उसके लिए वायलिन बजाना बहुत मुश्किल था! जिस संगीत की प्रारंभिक ट्रेनिंग को उन्होंने हल्के में लिया था, वो अब विफल होने लगी थी जैसा कि यसाय ने अनुमान लगाया था कि यदि वो वास्तव में एक महान संगीतकार बनना चाहता है तो उसे फिर से शुरू करना होगा.

येहुदी ने फिर से शुरुआत की. उसने उन सभी महान संगीत महारथियों का अध्ययन किया जिन्हें वो जानता था. वो रोजाना घंटों अभ्यास करता था. उसके साहस की बदौलत दुनिया अभी भी येहुदी मेनुहिन के संगीत का आनंद ले सकती है.